① B.A. II Hons (History) Paper – III

Ⓠ Conflict between Pallavas and Chalukyas

Ans →: सातवीं और आठवीं शताब्दी के मध्य कांची के पल्लवों और वातापी के पूर्वकालिन पश्चिमी चालुक्यों में भयंकर संघर्ष हुआ और यह संघर्ष दोनो ही राज्यों के लिए ~~भयंकर~~ घातक सिद्ध हुआ।

600 ई० के लगभग महेन्द्रवर्मन कांची के पल्लव सिंहासन पर बैठा। वह एक गुणवन्त वीर एवं प्रतापी सम्राट था। उसके विषय में नीलकंठ शास्त्री ने लिखा है—:

"A many sided genius great alike in war and in peace."

इसी समय चालुक्य वंश में पुलकेशिन द्वितीय नाम का प्रतिभाशाली सम्राट राज्य कर रहा था। पुलकेशिन द्वितीय वातापी के चालुक्यों में सबसे अधिक शक्तिवान था। उसके विषय में डी० सी० सरकार ने लिखा है—:

"Pulkeshin II was not only the greatest King of the chalukyas of vatapi but one of the greatest personalities of Ancient India."

पल्लवों की बढ़ती हुई शक्ति को पुलकेशिन II न देख सका और उसने पल्लवों के राज्य पर आक्रमण कर दिया। पल्लवों के उत्तरी भागो को हस्तगत करने के बाद उसने उनकी राजधानी काँची पर भी अधिकार करना चाहा। महेन्द्रवर्मन ने उससे भीषण संघर्ष किया था और बड़ी कठिनाई से वह काँची की रक्षा कर सका। पल्लव साम्राज्य के उत्तरी प्रदेशों पर चालुक्यों का अधिकार हो गया। पुलकेशिन ने अपने भाई विष्णुवर्धन को वहाँ के शासन का भार सौंपा, जिसने वेंगी में नवीन चालुक्य शाखा की नींव डाली।

पल्लव नरेश महेन्द्रवर्मन की मृत्यु 630 ई० मे हुई और उसके बाद नरसिंहवर्मन प्रथम

पल्लव सिंहासन पर आरूढ़ हुआ। उसके शासन काल में पल्लवों ने बहुत अधिक उन्नति की। नीलकंठ शास्त्री के शब्दों में— "There can be no doubt now even, that under him the Pallava's Powers attained a strength and prestige which it had not known since its revival under Simhavishnu (574-600 A.D)

अपने पिता के चालुक्यों से पराजित होने से नरसिंहवर्मन प्रथम बहुत अधिक क्षुब्ध था, और इस अवसर की तलाश में था कि किसी प्रकार चालुक्यों को नीचा दिखाया जाए। दुर्भाग्य से इसी समय पुलकेशिन II ने पल्लव राज्य पर आक्रमण कर दिया। पल्लवराजा नरसिंहवर्मन प्रथम ने पुलकेशिन के विरुद्ध लंका के युवराज मानवर्मा से सहायता ली और पुलकेशिन को अपने राज्य में न घुसने दिया तथा उसे कई बार पराजित किया। नरसिंहवर्मन केवल अपने राज्य की रक्षा से संतुष्ट नहीं हुआ। चालुक्यों को दबाने के लिए उसने पुलकेशिन के साम्राज्य पर आक्रमण किया और उसकी राजधानी वातापी को हस्तगत कर लिया। वीरतापूर्वक लड़ता हुआ महाराजा नरसिंहवर्मन ने इस विजय के उपलक्ष में "वातापी कोंड" की उपाधि धारण की।

पुलकेशिन द्वितीय की मृत्यु के बाद चालुक्य राज्य में स्थिति अत्यधिक दयनीय हो गई। 649 ई० 655 ई० के मध्य वातापी के चालुक्य सिंहासन पर कोई भी शक्तिशाली राजा आसीन न हुआ। वातापी और दक्षिणी प्रदेशों पर पल्लवों का ही अधिकार रहा अंत में 655 ई० के अंतिम चरण में पुलकेशिन द्वितीय के छोटे पुत्र विक्रमादित्य प्रथम ने अपने नाना गंग नरेश दुर्विनीत की सहायता से पल्लवों से लोहा लिया और उन्हें वातापी से बाहर खदेड़ दिया।

Scanned with CamScanner

नरसिंहवर्मन की मृत्यु के बाद उसका पुत्र महेन्द्रवर्मन द्वितीय सिंहासनारूढ़ हुआ। चालुक्य नरेश विक्रमादित्य उसपर आक्रमण करके उसे भी पराजित किया। महेन्द्रवर्मन केवल दो वर्ष तक राज्य किया और 670 ई० में उसकी मृत्यु हो गई।

670 ई० में परमेश्वर वर्मन प्रथम पल्लववंश के सिंहासन पर आरूढ़ हुआ। उसके विरुद्ध चालुक्य नरेश विक्रमादित्य प्रथम पांड्य नरेश मारवर्मन से संधि कर ली। चालुक्यों और पाड्यों की सम्मलित सेना ने पल्लव नरेश परमेश्वरवर्मन पर आक्रमण किया। परमेश्वर वर्मन पराजित हुआ और उसकी राजधानी कांची चालुक्यों के हाथ में चली आयी। इस अवसर पर भी परमेश्वरवर्मन ने अपना साहस नहीं छोड़ा और विक्रमादित्य का ध्यान कांची से हटाने के लिए अपनी एक सेना चालुक्य राज्य पर आक्रमण करने भेजी। उसकी सेना ने विक्रमादित्य के पुत्र और पौत्र विजयादित्य को पराजित कर दिया। तत्पश्चात विक्रमादित्य तथा परमेश्वरवर्मन के मध्य "पेरुवलनल्लूर" नामक स्थान पर भयंकर युद्ध हुआ जिसमें चालुक्य नरेश विक्रमादित्य पराजित हुआ और राज्य को छोड़ना पड़ा।

पेरुवलनल्लूर के युद्ध में चालुक्यों की पराजय के बाद कुछ समय तक पल्लव चालुक्य संघर्ष शान्त रहा। परंतु परमेश्वर वर्मन द्वितीय जिसका शासन काल 728 से 730 ई० तक माना जाता है; के शासन काल में पल्लवों और चालुक्यों में फिर संघर्ष हुआ। चालुक्य नरेश विजयादित्य के पुत्र युवराज विक्रमादित्य II ने गंगराजकुमार एरेयप की सहायता से कांची पर आक्रमण कर दिया। और परमेश्वरवर्मन द्वितीय को

पराजित कर दिया। 734 ई० में विक्रमादित्य द्वितीय चालुक्य सिंहासन पर आरूढ़ हुआ। उसके शासनकाल में पल्लववंश में नन्दिवर्मन द्वितीय शासन कर रहा था। चालुक्य नरेश विक्रमादित्य द्वितीय ने पल्लव नरेश नन्दिवर्मन द्वितीय पर आक्रमण कर दिया और उसकी राजधानी काँची पर अधिकार कर लिया। पल्लव राज्य में लूटपाट एवं जनता से बहुत सारा धन वसूलने के बाद वह स्वदेश लौट जाता। और नन्दिवर्मन ने पुनः काँची पर अधिकार कर लिया। काँची के राजसिंहेश्वर मंदिर में चालुक्य विजय का एक लेख प्राप्त हुआ है।

अपने शासन के अंतिम चरण में चालुक्य नरेश विक्रमादित्य द्वितीय ने पुनः पल्लवों से युद्ध में करना चाहा। अपने पुत्र 'कीर्तिवर्मन' को उसने काँची पर अधिकार करने भेजा। कीर्तिवर्मन ने नन्दिवर्मन द्वितीय को पराजित कर दिया। और बहुत से धन एवं अपार धन लेकर स्वदेश लौट जाता।

पल्लव नरेश नन्दिवर्मन द्वितीय 800 ई० तक राज्य किया। इधर चालुक्य नरेश विक्रमादित्य II की मृत्यु 745 ई० में हो गई। 746 ई० में कीर्तिवर्मन द्वितीय चालुक्य सिंहासन पर बैठा। कीर्तिवर्मन द्वितीय तथा पल्लव नरेश नन्दिवर्मन द्वितीय में युद्ध हुआ अथवा नहीं। इस विषय में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता है। इतना अवश्य ज्ञात है कि पल्लव नरेश नन्दिवर्मन ने चालुक्य नरेश कीर्तिवर्मन से भयभीत होकर उससे संधि कर ली थी और अपनी पुत्री रेवा का विवाह उससे कर दिया था।

अपने शासन काल के अंतिम दिनों में चालुक्य नरेश कीर्तिवर्मन द्वितीय को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। 758 ई० में राष्ट्रकूट सामन्त

दन्तिदुर्ग ने खुला विद्रोह कर अपने को दक्षिणापथ का स्वतंत्र राजा घोषित कर दिया। कीर्तिवर्मन ने 4-5 वर्ष तक राज्य किया। परन्तु उसकी वास्तविक शक्ति समाप्त हो गई थी। दन्तिदुर्ग की मृत्यु के बाद उसने पुनः सिर उठाना चाहा परन्तु राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण प्रथम ने उसे पराजित करके उसके राज्य का अपहरण कर लिया तथा इस प्रकार वातापी के चालुक्य वंश के राज्य का अंत हो गया। पल्लवों ने 897 ई० तक राज्य किया और उसके बाद पल्लव राज्य भी चोल राज्य में मिल गया।

इस प्रकार हम देखते है कि पल्लवों और चालुक्यों में जो संघर्ष हुआ उससे इन दोनो में से किसी को लाभ नहीं हुआ; निरन्तर युद्धों के फलस्वरूप इनकी शक्ति क्षीण हो गई और राष्ट्रकूटों ने चालुक्यों के राज्य को तथा चोलों ने पल्लवों के राज्य को हस्तगत कर लिया।

× ——— ×